**संपादनः**
राजेश खिंदरी
माधव केलकर
रश्मि पालीवाल
सी.एन. सुब्रह्मण्यम

**संपादकीय सहयोगः**
सुशील जोशी
राजश्री राजगोपाल
उमा सुधीर

**वितरणः**
अनिल लोखंडे
महेश बसेड़िया

**सहयोगः**
भूपेन्द्र नामदेव
राकेश खत्री
इंदु नायर

शैक्षणिक संदर्भ

शिक्षा की द्वैमासिक पत्रिका
अंक-55 जून-सितंबर 2006

**संपादन**
एकलव्य, चक्कर रोड, मालाखेड़ी
होशंगाबाद - 461 001
फोन : 07574 - 277267, 277268
sandarbh@eklavya.in

**वितरण**
एकलव्य, ई-7/ एच. आई. जी. 453,
अरेरा कॉलोनी, भोपाल, म. प्र. 462016
फोन : 0755 - 2464824, 2463380
bhopal@eklavya.in

**मुखपृष्ठ एवं पिछला आवरणः** रेगिस्तान की विषम परिस्थितिओं में खुद को ज़िंदा रखने के लिए पौधों में विभिन्न अनुकूलन पाए जाते हैं। वहां पाए जाने वाले केम प्लांट्स में स्टोमेटा के ज़रिए कार्बन डायऑक्साइड लेकर भोजन बनाने का आधा काम रात को होता है, और स्टोमेटा बंद रखते हुए सूर्य रोशनी के ज़रिए शेष आधा काम दिन में। दिन को स्टोमेटा बंद रखकर ये केम प्लांट्स रेगिस्तान की भयानक गर्मी में भी पानी को बचा कर रख पाते हैं।

केम प्लांट्स की जमात में ही शामिल हैं - मिमिक्री प्लांट्स या स्टोन प्लांट्स। ये मिमिक्री प्लांट्स जंतुओं या कीट-पतंगों की नकल नहीं करते बल्कि आसपास पड़े कंकड़-पत्थरों जैसे दिखते हैं। रेगिस्तान में पीले-भूरे कंकड़ों के ढेरों के बीच पड़े हुए इन स्टोन प्लांट्स या लिथोप्स को पहचानना बिल्कुल भी आसान नहीं होता। अक्सर रेगिस्तान के शाकाहारी जानवर भी इन्हें पहचानने में भूल कर बैठते हैं और मिमिक्री प्लांट्स की नकल सार्थक साबित होती है।

लेकिन इन पौधों पर भी बहार आती है, फूल खिलते हैं। उस समय कंकड़ों-पत्थरों के ढेर में अचानक खूब सारे फूल दिखाई देने लगते हैं और तब समझ में आता है कि ये पत्थर से दिखने वाले दरअसल पौधे हैं।

केम प्लांट्स की अन्य विशेषताओं के लिए पढ़िए लेख - सचमुच कमाल करते हैं रेगिस्तानी पौधे। (पृष्ठ 23)

*इस अंक में चित्र निम्न किताबों सेः **यूनिवर्सः** विलियम जे. कॉफमैन; प्रकाशकः डब्लू. एच. फ्रीमैन एंड कम्पनी, न्यूयॉर्क। शेष चित्रों का स्रोत इंटरनेट की विविध वेबसाइट हैं।*

**संपादनः**
राजेश खिंदरी
माधव केलकर
रश्मि पालीवाल
सी.एन. सुब्रह्मण्यम

**संपादकीय सहयोगः**
सुशील जोशी
राजश्री राजगोपाल
उमा सुधीर

**वितरणः**
अनिल लोखंडे
महेश बसेड़िया

**सहयोगः**
भूपेन्द्र नामदेव
राकेश खत्री
इंदु नायर

शैक्षणिक
# संदर्भ

शिक्षा की द्वैमासिक पत्रिका
अंक-55 जून-सितंबर 2006

**संपादन**
एकलव्य, चक्कर रोड, मालाखेड़ी
होशंगाबाद - 461 001
फोन : 07574 - 277267, 277268
sandarbh@eklavya.in

**वितरण**
एकलव्य, ई-7/ एच. आई. जी. 453,
अरेरा कॉलोनी, भोपाल, म. प्र. 462016
फोन : 0755 - 2464824, 2463380
bhopal@eklavya.in

**मुखपृष्ठ एवं पिछला आवरणः** रेगिस्तान की विषम परिस्थितिओं में खुद को ज़िंदा रखने के लिए पौधों में विभिन्न अनुकूलन पाए जाते हैं। वहां पाए जाने वाले केम प्लांट्स में स्टोमेटा के ज़रिए कार्बन डायऑक्साइड लेकर भोजन बनाने का आधा काम रात को होता है, और स्टोमेटा बंद रखते हुए सूर्य रोशनी के ज़रिए शेष आधा काम दिन में। दिन को स्टोमेटा बंद रखकर ये केम प्लांट्स रेगिस्तान की भयानक गर्मी में भी पानी को बचा कर रख पाते हैं।

केम प्लांट्स की जमात में ही शामिल हैं - मिमिक्री प्लांट्स या स्टोन प्लांट्स। ये मिमिक्री प्लांट्स जंतुओं या कीट-पतंगों की नकल नहीं करते बल्कि आसपास पड़े कंकड़-पत्थरों जैसे दिखते हैं। रेगिस्तान में पीले-भूरे कंकड़ों के ढेरों के बीच पड़े हुए इन स्टोन प्लांट्स या लिथोप्स को पहचानना बिल्कुल भी आसान नहीं होता। अक्सर रेगिस्तान के शाकाहारी जानवर भी इन्हें पहचानने में भूल कर बैठते हैं और मिमिक्री प्लांट्स की नकल सार्थक साबित होती है।

लेकिन इन पौधों पर भी बहार आती है, फूल खिलते हैं। उस समय कंकड़ों-पत्थरों के ढेर में अचानक खूब सारे फूल दिखाई देने लगते हैं और तब समझ में आता है कि ये पत्थर से दिखने वाले दरअसल पौधे हैं।

केम प्लांट्स की अन्य विशेषताओं के लिए पढ़िए लेख - सचमुच कमाल करते हैं रेगिस्तानी [illegible] ([illegible] 23)

---

*इस अंक में चित्र निम्न किताबों से: **यूनिवर्स:** विलियम जे. कॉफमैन; प्रकाशक: डब्लू. एच. फ्रीमैन एंड कम्पनी, न्यूयॉर्क। शेष चित्रों का स्रोत इंटरनेट की विविध वेबसाइट हैं।*